Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JULY-AUGUST, 2020, VOL- 8/60

उच्च प्राथमिक स्तर की शिक्षा में कहानी आधारित अनुदेशन एवं उसकी प्रासंगिकता

मया शंकर यादव

पी-एच.डी शोध छात्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा (महाराष्ट्र) 442001

Email. Mayashankar182@gmail.com

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षण करने से सम्बंधित है जिसमें कहानी आधारित अनुदेशन एवं उसकी प्रासंगिकता का वर्णन किया गया है।मानव सभ्यता के आदि-काल से ही कहानी सुननेएवं सुनाने की परंपरा किसी न किसी रूप में चली आ रही है।दूरदर्शन के आगमन के पूर्व शाम होते ही संयुक्त परिवार में बच्चे अपनी दादी-नानी के पास कहानी सुनने पहुँच जाते थे । संयुक्त परिवार में बच्चों का सामाजिक, मानसिक, बौद्धिक व भाषा का विकास सहज ही हो जाता है। उस समय अनौपचारिक शिक्षा का एक मुख्य माध्यम दादी-नानी की कहानियाँ थी ।छोटे परिवारों में यह कार्य माता, पिता, दादी, भईया या पास -पड़ोस की दादी-नानी करती थी । कहानी बच्चे को आनंदित करने के साथ ही साथ उन्हें अनेक प्रकार की जानकारियाँ प्रदान करने में सहायता करती है। जो बात हम बच्चों को सहज रूप से नहीं सिखा पाते हैं, वही बात वह कहानी के माध्यम से जल्दी सीख लेते हैं। उनके मन में किसी विषयवस्तु को कहानी के माध्यम से स्थाई प्रभाव डाला जा सकता है। इस तरह विज्ञान की कहानियाँ, जानवरों की कहानियाँ, सामाजिक कहानियाँ तथा अन्य शिक्षाप्रद से सम्बंधित कहानियाँ बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है।बच्चों को कौन-सी कहानियाँ अच्छी लगती हैं? कैसी हो कहानी? कहानी सुनाई कैसे जाए? इत्यादि का वर्णन करते हुए, उच्च प्राथमिक स्तर परकहानी केमाध्यम से शिक्षण की प्रासंगिकता का वर्णन किया गया है।

बीज शब्द : उच्च प्राथमिक शिक्षा, कहानी आधारित अनुदेशन, कहानी की प्रासंगिकता ।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

स्वतन्त्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने 1948 में एक शिक्षा सम्मलेन में कहा था कि बुनियादी शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है,क्योंकि उसके बिना वह बतौर नागरिक जिम्मेदारियां बखूबी नहीं निभा सकता है।किसी भी देश का भविष्य वहाँ के बच्चों को मिलने वाली उच्च प्राथमिक शिक्षा पर निर्भर करती है। उच्च प्राथमिक शिक्षा जिस प्रकार की होगी देश का भविष्य भी उसी प्रकार का होगा । इस स्तर पर ही देश तथा उसके प्रत्येक नागरिक का विकास निर्भर करता है। शिक्षा किसी भी प्रगतिशील समाज की रीढ़ होने के साथ ही साथ उसकी उन्नति और परिपक्क्वता का आइना होती है। जो समाज शिक्षा पर बल नहीं देता। वह गुमनामी में खो जाता है और कभी भी अर्थपूर्ण ढंग से प्रगति नहीं कर सकता। ऐसे समाज में आत्मा नहीं होती है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा को शिक्षा व्यवस्था का प्रथम स्तर कहा जाता है। इसस्तर की शिक्षा 6 या 7 वर्ष की आयु से 14 वर्ष की आयु तक चलती रहती है। अतः कक्षा 1 से लेकर कक्षा 8 तक की शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कहा जाता है(गुप्ता,2015)**। शिक्षा आयोग** (1964-66) **ने कक्षा** 1 **से** 5 **तक की शिक्षा को निम्न प्राथमिक शिक्षा तथा कक्षा** 6 **से** 8 **तक की शिक्षा को उच्च प्राथमिक शिक्षा कहा है। उच्च प्राथमिक स्तर की शिक्षा में** 11 **से** 14 **आयु वर्ग के बच्चे आते है(लाल**,2013)**। इस आयु वर्ग के बच्चों को कहानी सुनना बहुत अच्छा लगता है(अग्रवाल**,2016)**। कहानी सुनना बच्चों की दिनचर्या की अत्यंत महत्त्वपूर्ण गतिविधि है(सोनी**,2010)**।**

विश्व की प्रत्येक संस्कृतियों ने हमेशा से ही विश्वास, परंपराओं और इतिहास को भविष्य की पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए कहानियों का ही सहारा लिया है। कहानियाँ बच्चों की कल्पनाशीलता को बढ़ाती हैं, कहानी कहने और सुनने वाले के बीच समझ स्थापित करने हेतु यह सेतु का कार्य करती है और बाहुसंस्कृतिक समाज में बच्चों के लिए एक समान आधार तैयार करती है।बच्चों को स्थानीय परिवेश, भाषा और व्यवहार से परिचित होने का अवसर सहज ही मिल जाता हैं।राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा इसी बात की अनुशंसा करती है कि स्कूली ज्ञान को समुदाय के ज्ञान से जोड़ा जाय । विभिन्न समुदायों में ज्ञान के संसाधनों के रूप में प्रचलित कहानियाँ, स्कूल को समुदाय से जोड़ने का एक अच्छा साधन है।इससे बच्चे खुलकर अपनी बात कह पाते हैं। कहानी सुनाने का उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ समसायिक जीवन को समझाने,उसमें अपनी भूमिका को देखने, पात्रों के बारें में चर्चा के माध्यम से विभिन्न परिस्थितियों को समझने व उसके अनुसार व्यवहार करने की समझ विकसित करना होता है। कहानी स्कूलों में शिक्षण शास्त्र का एक सशक्त माध्यम भी है।बच्चों में मौखिक भाषा से सीखने एवं समझने और उनमें मनोरंजन की स्वाभाविक क्षमता होती है।इसीलिए कहानी का उपयोग दिनचर्या की जिंदगी में बेहद प्रचलित है(इगन,1986)**।कहानी को "भाषा, स्वर के उतार-चढाव, शारीरिक-गति, हाव-भाव आदि के उपयोग से बच्चों के लिए किसी कहानी की घटनाओं और चित्रों को सजीव बनाने की कला के रूप में" में परिभाषित किया जा सकता है।कहानी-कथन का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि कहानी को पूरा करने और उसे फिर से बनाने के लिए बच्चे किस प्रकार से कहानी के दृश्य और विवरण अपने मस्तिष्क में विकसित करते हैं।कहानी शिक्षण को प्लेटोने छोटे बच्चों के लिए इसे उत्तम बताया था । बच्चे स्वभाव से ही कहानी प्रेमी होते हैं। कहानी उनकी जिज्ञासा और उनके कौतूहल को शांत करती है कहानी उनकी कल्पनाओं के पंखों की उड़ानभरती है।रास ने प्रारंभिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के लिए इसी विधि को अपनाने का सुझाव दिया है। एफ.आर.वर्ड्स के अनुसार तेरह वर्ष की अवस्था तक के बच्चों को इतिहास पढ़ाने का मुख्य साधन कहानी होनी चाहिए ।**

शिक्षक द्वारा बताई गयी कहानी बच्चे सुनकर अपने-अपने समूह में कहानी लिखते हैं और घटनाओं तथा पात्रों की कल्पना कर कहानी का चित्र बनाते हैं ।इस प्रकार बच्चे समुदायों के मौखिक ज्ञान को लिखित रूप देते हैं और अपने रचनात्मक-संज्ञानात्मक कौशलों के उपयोग से उनका चित्रणकरते हैं।इन कहानियों को किसी किताब से न कहकर बल्कि समुदाय से सम्बंधित होनी चाहिए । जिनमें संस्कृति,समुदाय, पर्यावरण, इतिहास, भूगोल इत्यादि का समृद्ध ज्ञान शामिल होता है और जो बच्चों के जाने-पहचाने सन्दर्भों /प्रसंगों से जुड़ा हो। इस गतिविधि में एक तरफ जहाँ बच्चों ने कहानी के लेखक और चित्रकार के रूप में कहानी-उत्सव का आनंद लेते हैं।वही समुदाय के

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सदस्यों को स्कूल में बच्चों की अकादमिक गतिविधि में शामिल होने की पहचान मिलती है और बच्चों की भाषाई कौशलों के विकास में सहायता मिलती है।

कहानी आधारित अनुदेशन

कहानी कथन से तात्पर्य है- कहानी कहना या कहानी सुनना। कहानी कहते समय विषय-वस्तु के सूक्ष्म तथा जटिल अंशों को इतना सरल बनाया जाता है कि कक्षा के सभी विद्यार्थियों को स्पष्ट हो जाए। बच्चें अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण कहानी सुनने में रूचि लेते हैं। वे कहानी द्वारा प्रस्तुत ज्ञान को सरलता से समझते हैं और एकाग्रचित होकर एवं मन से ग्रहण करते है।अनुदेशन का सम्बन्ध आधुनिक कौशल एवं प्रविधियों को शिक्षा तथा प्रशिक्षण में प्रयोग करने से हैं। जिससे अधिगम को सुगम एवं सरल बनाया जाता है(खंडेलवाल,2015)।कहानी आधारित अनुदेशन के द्वारा विषय-वस्तु के सूक्ष्म एवं जटिल अंशों को सरल ढंग से प्रस्तुत कर बच्चों की जिज्ञासा बढ़ाने के साथ ही साथ उनकी काल्पनिक एवं तार्किक शक्तियों का विकास किया जाता है(कुलश्रेष्ठ,2010)। हजारों वर्षों से समाज में कहानियों के माध्यम से प्रमुख सिद्धान्तों को सिखाया जाता रहा है।कहानी मानवीय अनुभवों और कल्पनाओं का सम्मिश्रण है।कहानी की कथा-वस्तु, पात्र, चरित्र और उसके चरित्रों के मानसिक घात-प्रतिघातों का सरल-रोचक वर्णन बच्चों में अन्य विधियों से कही अधिक प्रभावित करता है।कहानी आधारित अनुदेशन की सरलता ही इसकी बड़ी विशेषता है, जो सुगमता से बच्चों की रूचि को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।अंग्रेजी के विख्यात आलोचक श्री हेनरी हडसन का कहना है कि कहानी वह है जो एक ही बैठक में सुगमता से समाप्त किया जा सके । विख्यात कथाकार एच.जी.वेल्स का विचार है कि कहानी वह गद्य-कथा है जो बीस मिनट में पढ़ी जा सके ।"

कहानी आधारित अनुदेशन के विभिन्न आयाम

कहानी आधारित अनुदेशन के विभिन्न आयाम निम्न माने गये हैं-

शीर्षक

बच्चे जब किसी कहानी को पढ़ते है,तो सबसे पहले उनकी दृष्टि कहानी के शीर्षक पर ही पड़ती है।इसलिए कहानी के सभी आयामों में प्राथमिक महत्त्व शीर्षक का ही होता है।कहानी के शीर्षक में यदि बच्चों को कोई नवीनता अथवा आकर्षण प्रतीत नहीं होता है, तो वह उसे पढ़ने की इच्छा नहीं करते है।बहुत से शीर्षक कहानी की सम्पूर्ण विषयवस्तु को ही अभिव्यक्त कर देते है।इससे स्पष्ट है कि कहानी के समग्र स्वरूप में उसके शीर्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान है।शीर्षक कहानी का न केवल प्राथमिकता की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण आयाम है,समग्र कहानी के स्वरूप का बोध कराने की दृष्टि से भी उसकी महत्ता है।इसलिए शीर्षक कहानी का एक सर्वथा अनिवार्य आयाम है।जिस प्रकार से नाम के अभाव में किसी मनुष्य की कोई वैयक्तिकता नहीं होती है,उसी प्रकार से शीर्षक के अभाव में किसी भी कहानी को समग्र रूपात्मक नहीं कहा जा सकता है।

कथानक

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

यही कहानी का आधार है।कहानी का प्रभावशाली होना इसी पर निर्भर करता है।एक या एकाधिक घटनाओं एवं वाह्य तथा अन्तःस्थितियों का तंतुजाल ही कथानक है। यह तंतुजाल जितना ही सुगठित होता है कहानीउतनी ही प्रभावशाली सिद्ध होती है (तिवारी,2005)। यू तो कहानी के आरम्भ और अंत का विचार करते हुए चेखव ने लिखा है-"कहानी का न कोई अंत होता है न प्रारंभ वह जीवन का एक फाँक है।"प्रत्येक कहानी में किसी न किसी कथा को कहने का एक प्रपत्र होता है, भले ही उस पर अधिक बल न दिया जाय । कथानक अपनी सीमा में जीवन के यथार्थ-आयामों का अंकन करता है तथा विस्तृत परिवेश के छोरों को बाँधने का प्रयत्न करता है तो कथानक में घटनाओं को इस प्रकार संयोजित किया जाता है कि उनमें कहीं भी रिक्तता का आभास मालूम ना हो(अवस्थी,1963)।

चरित्र चित्रण

कहानी के प्रमुख तत्त्वों में कथानकके उपरांत चरित्र चित्रण को ही स्थान दिया जाता है।एक कथानक जो अपनी कहानियों में पात्र योजना प्रस्तुत करता है,उसका मूल आधार मानव जीवन के विविध पक्ष होते है।विभिन्न पात्रों की योजना करके कहानी विभिन्न परिस्थितियों में मनुष्य के चरित्र की प्रतिक्रियात्मक संभावनाओं का निदर्शन करती है।कहानी में चरित्र चित्रण का महत्त्व इस कारण से भी अपेक्षाकृत अधिक हो जाता है, क्योंकि नियोजित पात्रों के ही माध्यम से कहानीकार मानवता का बहुपक्षीय रूप प्रस्तुत करता है।व्यावहारिक दृष्टिकोण से भी किसी भी समाज में रहने वाला मनुष्य अपनी समकालीन परिस्थितियों और निकटवर्ती वातावरण से प्रभावित होता है।मानव जीवन की पृष्ठभूमि में ही विविध क्षेत्रीय गुणों-अवगुणों की निर्मिति, विकास, परिवर्तन तथा ह्रास होता है।कहानीकार अपनी कहानी में नियोजित घटनाओं के अनुकूल पात्रों की सृष्टि करके उनके चरित्र चित्रण के माध्यम से मनुष्य के चारित्रिक विकास की इस प्रक्रिया का परिचय देता है।उसके पात्र विभिन्न परिस्थितियों में अपने स्वभाव तथा व्यक्तित्व के अनुसार आचरण करके उसके अभीष्ट की पूर्ति करते हैं।

कथोपकथन

कथोपकथन या संवाद योजना कहानी का चौथा मूल आयाम है। सैद्धांतिक दृष्टि से तो कहानी के प्रायः सभी तत्त्व परस्पर सम्बद्ध होते है, परन्तु व्यावहारिक दृष्टिकोण से कथोपकथन का सम्बन्ध पात्रों से अधिक घनिष्ठ होता है।कहानी में नियोजित पात्रों के पारस्परिक वार्तालाप के माध्यम से ही इस तत्त्व का समावेश कहानी में किया जाता है।पात्रों तथा कहानी के अन्य तत्त्वों की भांति ही कथोपकथन के माध्यम से घटनाओं में गतिशीलता आती है।कथावस्तु के विकास के लिए कथोपकथन की योजना करने से कहानीकार को एक सुविधा यह रहती है कि उसे अनावश्यक विस्तार नहीं देना पड़ता है। देश, काल अथवा वातावरण का बोध भी पात्रों के पारस्परिक वार्तालाप द्वारा बच्चों को कराया जा सकता है।कथोपकथन का एक उद्देश्य कहानी की कथावस्तु का विकास करना भी है।इसके माध्यम से घटनाओं में सजीवता आती है।

वातावरण

कहानी विधि में वातावरण का महत्त्वपूर्ण आयाम हैं।कहानी का विषय प्रायः मानव और उसका क्रियाकलाप है। मानव-जीवन किसी न किसी परिवेश में ही व्यतीत होता है। जब तक कहानी को घटना या उसके पात्रों का किसी

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

काल-विशेष तथा स्थान-विशेष का चित्रण न होता है तब तक कहानी कल्पना-मात्र ही लगती है।कहानी को विश्वसनीय बनाने के लिए इसमें वातावरण की सृष्टि अति आवश्यक है।

उद्देश्य

सृष्टि में कोई भी कार्य निरुद्देश्य नहीं होता । मनुष्य जो भी कार्य करता है उसका कोई न कोई ध्येय अवश्य होता है। उसी प्रकार कहानीकार के सम्मुख कोई न कोई निश्चित उद्देश्य आवश्यक होता है, जिससे प्रेरित होकर वह कहानी बच्चों को सुनाता है।

उच्च प्रथम स्तर के बच्चों को उनकी मातृभाषा में कहानी सुनाने से उनके सीखने की क्षमता में वृद्धि होती है।यदि मातृभाषा में ही बालक के परिवेश की भाषा हो, तो वह उसके माध्यम से व्यापक समाज से संपर्क स्थापित करते हैं और उसी मानक के रूप में आगे औपचारिक शिक्षा ग्रहण करते हैं।इसीलिए औपचारिक शिक्षा में मातृभाषा का तात्पर्य किसी क्षेत्र विशेष की उस भाषा से होता है जिसके माध्यम से उस क्षेत्र का पढ़ा लिखा समाज विचारों का आदान -प्रदान या सम्प्रेषण आसानी से करता है।मातृभाषा का शिक्षा के क्षेत्र में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है।इसी के माध्यम से बच्चे बोलने- लिखने एवं विचार व्यक्त करते हैं।अपने विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति कहानी के माध्यम से जितनी सहजता, स्पष्टता एवं प्रभावी रूप से कर सकते है। उतनी किसी अन्य विधि में नहीं ।यही बच्चों के स्वप्नों तथा अनुभूतियों की भाषा होती है।बाल्यावस्था अवस्था में मातृभाषा के विकास और भविष्य के बौद्धिक जीवन और सृजनात्मक के विकास के लिए कहानी आधारित अनुदेशन एक सशक्त शिक्षण का माध्यम है।विश्व के सभी शिक्षाशास्त्री तथा मनोवैज्ञानिक इस बात से सहमत है कि शिक्षण का सर्वश्रेष्ठ माध्यम कहानी आधारित अनुदेशन ही हो सकती है।

कहानी का चुनाव

कहानी सुनाने से सबसे पहली अवस्था कहानी का चुनाव करना होता है। कौन-सी कहानी सुनाई जानी चाहिए ।ऐसे प्रश्नों का उत्तर कुछ अन्य प्रश्नों पर निर्भर करता है। कहानी किस आयु के बच्चों को सुनाना है? कहानी बच्चों की किस भाषा में सुनाई जाय ? कहानी क्यों सुनानी है? कम आयु वाले बच्चों के लिए कहानी का चुनाव करते समय हमें बच्चों की रूचि, क्षमता एवं उनकी भाषा को ध्यान में रखना होता है।छोटे बच्चों को उनके जीवन और उनकी कल्पनाओं से सम्बंधित कहानियाँ अच्छी लगती है। उनके आस -पास के परिवेश से सम्बंधित जैसे- पशु-पक्षी, खेल-खिलौने, मेला-त्योहार, परिवार इत्यादि उनके मनपसंद विषय है।बच्चों को ऐसी कहानियाँ अच्छी लगती है जिनमें छोटे -छोटे वाक्य और तुकबंदी हो एवं मातृभाषा में कहानी सुनाई जाय।बच्चों को जानकरी /सीख की चिंता किये बिना केवल उन्हीं कहानियों के चयन करने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जो बच्चों को अच्छी लगे । यदि कहानी अच्छी है तो शिक्षक के सभी उद्देश्य अपने आप पूर्ण होते चले जाते हैं।

स्वनिर्मित कहानियों का उपयोग करना

बच्चों को कहानी सुनाने के लिए स्वनिर्मित कहानियों का उपयोग किया जाना चाहिए ।कहानी को थोडा-फेरबदलकर करके सुनाया जा सकता है।किसी पुस्तक को पढ़कर या पाठ्यपुस्तक को पढ़कर उसमें बच्चों की

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भाषा के शब्दों का उपयोग करके सुनाई जाए । समाचार-पत्र, पत्रिकाओं, कहानी की पुस्तकों,पारंपरिक कहानियों में से भी कहानी का चयन किया जा सकता है।शिक्षक स्वनिर्मित कहानियों का उपयोग करके बच्चों को स्वयं भी कहानियों का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते है।विद्यालय में अलग-अलग समाज के बच्चे आते है और वे अपने अनुभव के आधार पर विभिन्न कहानियों का एक संकलन बना सकतेहैं।उनका अनुभव संसार तो निश्चय ही अलग होता है। अधिकतर पारंपरिक कहानियों में वे सभी बातें समाहित रहती है।जिसके कारण सभी बच्चों को अच्छी लगती है।बच्चे न केवल अपने मतलब की जानकारी /सीख उसमें से अपने आप निकाल लेते हैं।

कहानी आधारित अनुदेशन के माध्यम से कहानी कैसे सुनाएँ

शिक्षक कहानी के चुनाव के बादउन्हीं कहानियों को बच्चों को सुनाना चाहते है। कहानी सुनाने से पहले बच्चों को कहानी के प्रति रूचि उत्पन्न करना चाहिए । कहानी सुनाने के लिए पढ़कर या बिना पढ़े भी कहानी सुनाई जा सकती है।दोनों विधियों का अपना अलग-अलग शैक्षिक महत्त्व है।जब शिक्षक बच्चों को किसी नवाचारी ढंग से किसी नए प्रकरण से परिचित कराते है तो उस समय शिक्षक उनके अत्यधिक रूचि और उल्लास को महसूस करते हैं। आमतौर पर शिक्षक यह भी देखते है कि कितने अधिक बच्चों ने इस प्रकरण के सीखने में तत्परता दिखाई हैं। सिद्धांतों को बिना दैनिक जीवन से जोड़े समझाना बहुत सारे विद्यार्थियों के लिए कठिनाई होती है। कहानी आधारित अनुदेशनजैसी रचनात्मक और प्रेरक माध्यम से किसी प्रसंग की भूमिका प्रदान करने के लाभ तथा प्रभाव इस प्रकार हैं- बच्चों के ध्यान को केन्द्रित रखना और इसे पूरे प्रकरण के दौरान बनाए रखना । नवीन अन्वेषण और पूछताछ के द्वारा सीखने को प्रोत्साहित करना। बच्चों एवं शिक्षक तथा स्कूल के प्रति सकारात्मक भाव पैदा करना। सीखने को सुगम बनाने के लिए व्यक्तिगत संवेदनात्मक प्राथमिकताओं की आवश्यकताओं पर ध्यान देना । विद्यार्थियों को सक्रियता से जोड़ते हुए सीखने को प्रोत्साहित करना। शिक्षक और बच्चों के मध्य अंतर-वैयक्तिक संबंधों को विकसित करना। इस प्रकार के अनुभव पर आधारित अधिगम से बच्चे कभी नहीं भूलते है।

वर्तमान समय में कहानी आधारित अनुदेशन की प्रासंगिकता

वर्तमान समय में शिक्षा का बोझ लगातार बढ़ता ही जा रहा है। व्यक्ति कम समय में अधिक से अधिक ज्ञान एवं सूचनाएं ग्रहण कर लेना चाहता है। परिणामस्वरूप वर्तमान शिक्षा प्रणाली सूचना आधारित शिक्षा प्रणाली की ओर उन्मुख हो गयी है। ऐसे में सभी विषयों में सूचनाएं एवं ज्ञान में लगातार वृद्धि होने से विषय बोझिल होते जा रहे हैं।

बच्चों के स्व-अनुभवों से शुरुआत करना महत्वपूर्ण होता है। खासतौर से छोटे बच्चों के साथ क्योंकि उन्हें बाहरी दुनिया में जीवन का अधिक अनुभव नहीं होता है। जिससे बच्चे तुरन्त अपने आपको अपने परिवेश से जोड़ नही पाते है। जिससे जानकारी को अर्थ प्रदान करना कठिन होता है फ़िर भी यदि शिक्षक किसी वस्तु का उपयोग करते हुए, जो स्थानीय हो और उनके लिये समसामयिक हो तो कही ना कही बेहतर परिणाम प्राप्त होते है। कहानियाँ बच्चों के जीवन को अर्थपूर्ण बनाने में मदद करती हैं।इससे वह प्रसन्न होकर उनमें आत्मविश्वास,जिज्ञासा और

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सतत कार्य करने की उर्जा मिलती है, जो उन्हें एक बड़ी दुनिया में अपनी ताकत, अपनी क्षमताओं को विकसित होने का एक अवसर मिलता है(होल्ट,2005) **।बच्चे उस समय सबसे अच्छे ढंग से सीखते हैं। जब वे शैक्षिक अनुभव से सक्रिय रूप से जुड़े होते हैं। एक-दूसरों के साथ परस्पर संवाद और अपने विचारों को साझा करने से शिक्षक और बच्चे अपनी समझ की गहराईयों में वृद्धि करते हैं। कहानी कहना भी कला हैं। छोटे बच्चे स्वाभाविक रूप में इन्हें याद भी कर लेते है। आग की खोज, मनुष्य की खोज, अनाज की खोज कहानियाँ सुनाई जाय । छोटे बच्चों में कहानियों को सार्थक बनाने तथा स्पष्टीकरण के लिए, चित्रों, भानचित्रों और फोटो की सहायता ली जा सकती है। गौतम बुद्ध, अशोक, शिवाजी महाराज, झलकारीबाई के युद्धों की कहानियों को बच्चों को चित्रों की सहायता से अधिक बोधगम्य ढंग बताई जा सकती हैं।**

सन्दर्भ

अवस्थी,डी.(1963). कहानी विविधा, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड, पृष्ठ संख्या 26-27.

इगन,के.(1986). टीचिंग एज स्टोरी टेलिंग : एन एल्टरनेटिव अप्रोच टू टीचिंग एंड क्यरिकुला इन द एलेमेंट्री स्कूल सिकागो: यूनिवर्सिटी आफ सिकागो प्रेस.

कुलश्रेष्ठ,एस. पी.(2010). शैक्षिकतकनीकी के मूल आधार,आगरा:श्री विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ संख्या 30-32.

खंडेलवाल,एल.(2015). कला आधारित अनुदेशन की विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों की सततीय आदतों पर प्रभाव का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध,दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग

जॉन होल्ट (2005) बचपन से पलायन , एकलव्य , भोपाल, पृष्ठ संख्या 12.

गुप्त,जी. एच.(2008).साहित्यिक निबंध, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन

गुप्ता,एस. पी.(2015).भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, पृष्ठ संख्या 295.

तिवारी, एन. एन.(2005).हिंदी कहानी में प्रकृति चित्रण, मथुरा : अमर प्रकाशन, पृ. सं.59-61.

मिश्र,एस. के.(2002).कहानीकार प्रेमचंद रचना दृष्टि और रचना शिल्प, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, पृ. सं.8-10.

लाल,आर. बी.(2013).भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ, मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन्स, पृ. सं. 396.

सिंह, आर. के.(2005).वाराणसी जनपद में प्राथमिक शिक्षा के विकास एवं समस्याओं का अध्ययन,अप्रकाशित शोध प्रबंध, बीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर.

सोनी, आर.(2010).एक समय की बात है, नई दिल्ली : एनसीईआरटी, पृष्ठ संख्या 15.

https://educationmirror.org/2019/05/01/storytelling-importance-in-education-pedagogical-tool-also/
https://educationmirror.org/2018/08/31/how-to-tell-stories-for-children/
https://educationmirror.org/2012/12/19//भाषा-शिक्षण-का-होल-लैंग्व/

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies